एस.एफ.आर.आई. टेक्नीकल बुलेटिन : ~~48~~ 49

मध्यप्रदेश के महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक पादप

लेखक
बी.नाथ
एच.ओ.सक्सेना
एस.जी.शुक्ला, वैद्य

अनुवाद एवं परिवर्धन
डॉ. जी.एस.मिश्रा
सूरज सिंह रघुवंशी

राज्य वन अनुसंधान संस्थान
पोलीपाथर, जबलपुर
2005

एस.एफ.आर.आई. टेक्नीकल बुलेटिन : 48

मध्यप्रदेश के महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक पादप

लेखक

बी. नाथ, एच.ओ. सक्सेना

एवं एस.जी. शुक्ला, वैद्य

अनुवाद एवं परिवर्धन

डॉ. जी.एस. मिश्रा

वरिष्ठ अनुसंधान सहायक

जैव विविधता शाखा

एवं

सूरज सिंह रघुवंशी

वरिष्ठ अनुसंधान सहायक

प्रभारी, पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोलीपाथर, जबलपुर

2005

प्रकाशक

राज्य वन अनुसंधान संस्थान पोलीपाथर

जबलपुर (म.प्र.) - 482 008

फोन : 0761-2665540

फैक्स : 0761-2661304

E-mail : sdfri@rediffmail.com

प्रतिलिप्याधिकार © : प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण (अंग्रेजी) : 1968

द्वितीय हिन्दी अनुवाद एवं परिवर्धित संस्करण : 2005

कवर फीचर : डॉ. उदय होमकर

नोट : इस पुस्तिका को प्रकाशित करने में प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गयी है। यदि कोई त्रुटि पाई जाती है तो उसके लिए प्रकाशक, लेखक एवं अनुवादकगण जिम्मेवार नहीं होंगे। पुस्तिका का उद्देश्य पाठकों को औषधीय पौधों एवं जैव विविधता संरक्षण के प्रति जागरुक करना है। पुस्तिका में दी गई उपचार विधि, कुशल चिकित्सक के मार्गदर्शन में अपनाने की सलाह दी जाती है।

प्राक्कथन

आयुर्वेद में इस बात का निर्देश है कि हमे ऐसे उपाय कर लेना चाहिए, जिनसे हम स्वस्थ रहें तथा शरीर रोगों के प्रभाव से पूर्णतया मुक्त हो। आयुर्वेद में औषध और भेषज दोनों का वर्णन किया गया है। औषध के अंतर्गत वनस्पतियों को रखा गया है, जो शरीर को रोगों के आक्रमण के विरुद्ध सशक्त रखती है और भेषज वे हैं, जो रोग हो जाने पर उन्हें दूर करती है। भेषज का प्रयोग शरीर को रोग मुक्त करने के लिए वैद्य करते हैं। औषधियों का प्रयोग एवं उनकी जानकारी प्रत्येक व्यक्ति को होना चाहिए जिससे वह उन कारकों से बचा रहे जो रोग उत्पन्न करते है। आयुर्वेद में कहा गया है। कि मनुष्य जिस स्थान का होता है, उसी स्थान विशेष में उत्पन्न होने वाली औषधियां उसके लिए सर्वाधिक हितकारी होती है।

प्राचीन काल में घर के आसपास उत्पन्न होने वाली वनस्पतियों से निरोगता प्राप्त हो जाती थी, ऐसा होना आज भी वांछनीय है क्योंकि एलोपैथिक दवाईयां अपनी तीव्र प्रतिक्रिया द्वारा जहां रोग के जीवाणुओं को खत्म करती हैं, वही अनजाने में कई लाभकारी सह-जीवाणुओं का भी नाश हो जाता है। परिणामस्वरुप कई अन्य बीमारियों के आक्रमण का खतरा बढ़ जाता है, जबकि प्राकृतिक जड़ी-बूटियों से तैयार की गयी औषधि, शरीर को बिना हानि पहुँचाए रोग को जड़ से खत्म कर देती है। अतः कहना अत्युक्ति न होगा कि आयुर्वेदिक औषधि ही श्रेयस्कर है। इसी कारण विश्व समुदाय का रुझान परम्परागत जड़ी-बूटियों की ओर बढ़ा है। भारत में पाई जाने वाली वनौषधियों की मांग विदेशों के लिए दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। साथ ही घरेलू बाजार मे व्यापक अनुसंधान के परिणाम स्वरुप रोग निदान की दवाइयों के अतिरिक्त सौन्दर्य प्रसाधनों के रुप में नए उत्पादों के पदार्पण से युवावर्ग की पसंद के कारण देश के अंदर मांग में कई गुना वृद्धि हुई है।

वनों में पाई जाने वाली असंख्य प्रजातियों में से आज भी कुछ प्रजातियों के उपयोग व महत्व का ज्ञान स्थानीय आदिवासी एवं वैद्यों को है। ये लोग अपना ज्ञान दूसरों को मरते दम तक नहीं देते। कुछ लोग अपने अंत समय में परिवार के किसी सदस्य को बता जाते हैं, कुछ का असमय देहान्त हो जाने के कारण उक्त ज्ञान किसी को बता ही नहीं पाते। इस प्रकार उनकी बहुमूल्य जानकारी उन्ही के साथ दफन होकर रह जाती है। ज्ञान के अभाव में प्रायः लोग कृषि में बाधक मानकर या अन्य कारणों से अधिकांश प्रजातियों को बेकार की खरपतवार समझ नष्ट कर देते हैं। औषधीय प्रजातियों का चिकित्सा की सभी पद्धतियों में अत्याधिक महत्व है, अतः इनके संरक्षण व संवर्धन की नितान्त आवश्यकता है।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा पौधों की सही पहचान, सही उपयोग, प्रजाति का प्राप्ति स्थल, स्थानीय नाम आदि के संबंध में जानकारी प्रदान करने की दृष्टि से वर्ष 1968 में ''इम्पोर्टेन्ट आयुर्वेदिक प्लांटस् ऑफ मध्यप्रदेश'' नामक पुस्तिका का प्रकाशन किया गया था। पुस्तिका अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होने के कारण, यद्यपि अनुसंधान कर्ताओं एवं वन अधिकारियों के लिए काफी उपयोगी रही, लेकिन इससे आम नागरिकों एवं क्षेत्रीय वन कर्मचारियों को अपेक्षाकृत लाभ नही प्राप्त हो सका। आज खेती द्वारा व्यापक पैमाने पर औषधियां उगाई जा रही है। लोगों में अपने आस - पास की जड़ी-बूटियों को जानने व पहचानने की उत्सुकता को देखते हुए, इस पत्रिका को सरल हिन्दी भाषा में अनूदित कर तथा अन्य उपयोगी औषधीय प्रजातियों का समावेश कर और अधिक ज्ञानवर्धक बनाया गया है।

पुस्तिका के इस हिन्दी संस्करण ''मध्यप्रदेश के महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक पादप'' में वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य के जिलों के नाम मूल अंग्रेजी संस्करण में होने के कारण जोड़े गये है ताकि किसी प्रकार के भ्रम की स्थिति न उत्पन्न हो।

मध्यप्रदेश के महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक पादप का अनुवाद कार्य इस संस्थान में पदस्थ डॉ. जी.एस.मिश्रा एवं श्री एस.एस. रघुवंशी वरिष्ठ अनुसंधान सहायकों के अथक प्रयास से संभव हो सका है। आशा है पुस्तिका अपने नए स्वरुप में उपयोगकर्ताओं के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होगी तथा औषधीय पादपों के प्रति लोगों में जागरुकता बढ़ेगी।

(डॉ. पी.के.शुक्ला)
संचालक
राज्य वन अनुसंधान संस्थान
जबलपुर

आभार

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा वर्ष 1968 में प्रकाशित पुस्तिका "इम्पोर्टेन्ट आयुर्वेदिक प्लांटस् ऑफ मध्यप्रदेश" का लाभ और अधिक पाठकों को पहुँचाने की दृष्टि से इसके हिन्दी अनुवाद एवं परिवर्धन का प्रयास किया गया है। हिन्दी पुस्तिका में प्रजातियों की कुल संख्या 156 से बढ़ाकर 190 तक कर दी गयी है। पत्रिका में समाहित समस्त प्रजातियों के कुल नामों को जोड़ा गया है। इसके अतिरिक्त आवश्यकतानुसार एवं ज्ञात हुए उपयोगों, आयुर्वेदिक योग, प्राप्ति स्थल का भी समावेश किया गया है। पाठकों को प्रजातियों के बारे में त्वरित जानकारी प्रदान करने के लिए प्रजातियों के अंग्रेजी वर्णमालानुसार अकारानुक्रमणिका, रोगों एवं उपचार योगों के जटिल संस्कृत नामों का सरल हिन्दी में अर्थ भी बतलाया गया है।

पत्रिका का हिन्दी अनुवाद कार्य करते हुए कई रोगों एवं कई प्रजातियों के बारे में हमारा भी ज्ञानवर्धन हुआ। अनुवाद कार्य में प्रजातियों के कुल नामों को जोड़ने एवं वैज्ञानिक नामों में हुए परिवर्तनों को यथा संभव स्थापित करने में सहयोग प्रदान करने के लिए हम संस्थान के उप संचालक (प्रचार-प्रसार) श्री आर.जी. सोनी एवं जैव विविधता वैज्ञानिक डॉ. जे.एल. श्रीवास्तव का आभार व्यक्त करते हैं। साथ ही संस्थान के जे.आर.एफ. श्री शेषमणि गौतम, श्री शांति स्वरूप त्रिपाठी एवं डॉ. अनिल कुमार भी धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने अतिरिक्त समय प्रदान कर उपयोगी जानकारी प्राप्त करने में सहयोग प्रदान किया।

यद्यपि पत्रिका के अंग्रेजी शब्दों को हिन्दी स्वरूप प्रदान करने में पर्याप्त सावधानी बरतने का प्रयास किया गया है, लेकिन इसके बावजूद भी पाठकों के विचार में आंशिक त्रुटि नजर आती है तो अनुवादकर्तागण सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए नजर अंदाज करने का अनुरोध करते हैं।

- अनुवादकद्वय